Class - IX

Subject - Sanskrit

प्रथम: पाठ: -

'भारतीवसन्तगीति'

निनादय नवीनमये वाणि ! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललित - नीति - लीनाम् ।
मधुर - मञ्जरी - पिञ्जरी - भूत - माला:
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसाला:
कलापा: ललित- कोकिला काकलीनाम् ॥1॥
निनादय . . . ॥

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम् ॥2॥
निनादय . . . ॥

ललित - पल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम् ॥3॥
निनादय - - - ॥

लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलिलम्,
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम् ॥५॥
निनादय - - - ॥

अभ्यासप्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत -

क) कविः कां सम्बोधयति ?
उत्तरम् वाणिं

ख) कविः वाणीं कां वादयितुं प्रार्थयति ?
उत्तरम् वीणां

ग) कीदृशीं वीणां निनादयितुं प्रार्थयति ?
उत्तरम् नवीनाम्

घ) गीतिं कथं गातुं कथयति ?
उत्तरम् मृदुं

ङ) सरसाः रसालाः कदा लसन्ति ?
उत्तरम् वसंते (वसन्तकाले)

2. पूर्ण वाक्येन उत्तरं लिखत -

क) कविः वाणीं किं कथयति ?
उत्तरम् कविः वाणीं कथयति यत् अयि वाणि! नवीनाम् वीणां निनादय। ललित नीति लीनाम् मृदुं गीति गाय।

ख) वसन्ते किं भवति ?
उत्तरम् वसन्ते मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-माला: सरसा रसाला: लसन्ति। ललित कोकिला कलापा: काकलीनाम् कुञ्जति।

ग) सलिलं तत्र वीणामाकर्ण्य कथम् उच्छलेत् ।
उत्तरम् सलिलं तत्र वीणामाकर्ण्य नदीनां विमल शुभ्र शान्तिशीलम् नदीनां कान्तसलिलं उच्छलेत् ।

घ) कविः भगवतीं भारतीं कस्याः तीरे मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोक्य वीणां वादयितुं कथयति ?
उत्तरम् कविः भगवतीं भारतीं कालिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोक्य वीणां वादयितुं कथयति ।

अनुवाद

1. निनादय नवीनामये ---- काकलीनाम् ॥1॥

अनुवाद हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ, सुन्दर नीतियों से परिपूर्ण गीत का मधुर गान करो। इस वसन्त में मधुर मञ्जरियों से पीली हो गयी रसाल (रसीले) आम के पेड़ों की माला सुशोभित हो रही है। मनोहर काकली (बोली युक्त) वाली कोयल का समूह सुन्दर लग रहे हैं। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

2. वहति मन्दमन्द ---- मधुमाधवीनाम् ॥2॥

अनुवाद यमुना के चंचल लहरों से घिरे तट पर जल बिन्दुओं से सुरभित वायु के मन्द-मन्द बहने पर फूलों से झुकी हुई मधुमाधवी लता (बेल) को देखकर, हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

3. ललित-पल्लवे ---- मलिनामलीनाम् ॥3॥

अनुवाद मलयपवन से स्पृष्ट (छुकर गये) ललित पल्लवों (नये पत्तों)

ग) सलिलं तव वीणामाकर्ण्य कथम् उच्चलेत् ।

उत्तरम् सलिलं तव वीणामाकर्ण्य ललनां मिलित्वा सुमकान्तिमीतम् चञ्चलं नदीनां कान्तसलिलं उच्चलेत् ।

घ) कविः भगवतीं भारतीं कस्याः तीरे मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोक्य वीणां वादयितुं कथयति ?

उत्तरम् कविः भगवतीं भारतीं कालिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोक्य वीणां वादयितुं कथयति ।

अनुवाद :

1. निनादय नवीनामये - - - काकलीनाम् ॥1॥

अनुवाद - हे वाणी ! नवीन वीणा को बजाओ, सुन्दर नीतियों से परिपूर्ण गीत का मधुर गान करो । इस वसन्त में मधुर मञ्जरियों से पीली हो गयी सरस (रसीले) आम के वृक्षों की माला सुशोभित हो रही है । मनोहर काकली (बोली कूक) वाली कोयल का समूह सुन्दर लग रहे हैं । हे वाणी ! नवीन वीणा को बजाओ ।

2. वहति मन्दमन्दं - - - मधुमाधवीनाम् ॥2॥

अनुवाद यमुना के बेतस लताओं से घिरे तट पर जल बिन्दुओं से पूरित वायु के मन्द-मन्द बहने पर फूलों से झुकी हुई मधुमाधवी लता (बेल) को देखकर, हे वाणी ! नवीन वीणा को बजाओ ।

3. ललित-पल्लवे - - - मलिनामलीनाम् ॥3॥

अनुवाद मलयपवन से स्पृष्ट (छूकर आई) ललित पल्लवों (नये पत्तों)

वाले वृक्षों, पुष्पपुञ्जों तथा सुन्दर कुञ्जों पर काले भौरों की गुञ्जार करती हुई पंक्ति को देखकर हे वाणी नवीन वीणा को बजाओ।

4 लतानां नितान्तं सुमं ---- नदीनाम् ॥४॥

अनुवाद तुम्हारी ओजस्विनी वीणा को सुनकर लताओं के नितान्त शान्त सुमन (फूल) हिल उठें, नदियों का मनोहर जल क्रीड़ा करता हुआ उछल पड़े। हे वाणी! नवीन वीणा को बजाओ।

द्वितीय पाठः - "स्वर्णकाकः"

1 पुरा कस्मिंश्चिद् ग्रामे ---- अगच्छत्।

अनुवाद - पुराने समय में किसी गाँव में एक गरीब बूढ़िया (बूढ़ी औरत) रहती थी। उसके एक विनम्र व मनोहर स्वभाव वाली बेटी थी। एक बार माँ ने थाली में चावल सुखाकर बेटी को आदेश दिया" सूर्य के ताप में रखे चावलों की पक्षियों से रक्षा करो। कुछ समय बाद एक विचित्र कौआ उसके पास उड़कर आया।

2 नैतादृशः स्वर्णपक्षो ---- निद्रामपि न लेभे।

अनुवाद उसने पहले कभी भी ऐसा सोने के पंखों वाला और चाँदी की चोंच वाला सोने का कौआ नहीं देखा। उसे चावलों को खाते हुए और हसते हुए देखकर वह लड़की रोने लगी। उसको देखते हुए वह प्रार्थना करती है - "चावल मत खाओ। मेरी माँ बहुत गरीब है।" सोने के पंखों वाला कौआ बोला "दुःख मत करो। सूर्योदय से पहले गाँव के बाहर पीपल के पेड़ के नीचे आ जाना। मैं तुम्हें चावलों का मूल्य दे दूंगा।

प्रसन्नता के कारण बालिका ने नींद भी नहीं ली।

3 सूर्योदयात्पूर्वमेव सा ---- आरोहत ।

अनुवाद वह सूर्योदय से पहले ही वहां पहुँच गई। उसने पेड़ के ऊपर देखा तो आश्चर्यचकित रह गई, क्योंकि वहाँ सोने का महल था। जब कौआ सोकर उठा तब उसने सोने की खिड़की से झांककर कहा - " अरे बालिका! तुम आ गई, रुको, मैं तुम्हारे लिए सीढ़ियाँ उतार रहा हूँ, तुम बताओ सोने की, चांदी की या ताँबे की ?" कन्या ने कहा " मैं गरीब माँ की बेटी हूँ। ताँबे की सीढ़ियों से ही आऊंगी।" परन्तु कौए ने सोने की सीढ़ी दी और वह सोने की सीढ़ियों से भवन में चढ़ी।

4 चिरकालं भवने ---- स्वगृहं गच्छ।

अनुवाद वह काफी देर तक भवन में लगे विचित्र चित्रों और वस्तुओं को देखकर आश्चर्य करती रही। उसे थकी हुई देखकर कौए ने कहा - पहले नाश्ता कर लो - बोलो तुम सोने की थाली में भोजन करोगी या चांदी की या ताँबे की ? बालिका बोली - ताँबे की थाली में ही मैं गरीब भोजन करूंगी। तब वह आश्चर्यचकित हुई जब स्वर्णकाक ने सोने की थाली में भोजन परोसा।" ऐसा स्वादिष्ट भोजन आजतक उस बालिका ने कभी नहीं खाया। कौआ बोला - बालिका मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा यहीं रहो परन्तु तुम्हारी माँ अकेली है। अतः तुम जल्दी ही अपने घर जाओ।

5 इत्युक्त्वा काकः ---- सञ्जाता ।

इतना कहकर कौआ कमरे से तीन संदूक लेकर आया और उसे बोला - बालिका तुम्हारी जो इच्छा हो एक संदूक ले लो।

छोटी संदूक को लेकर बालिका बोली इतना ही मेरे चावलों का मूल्य है। घर आकर उसके द्वारा संदूक को खोला गया। उसमें बहुमूल्य हीरे देखकर वह प्रसन्न हुई और धनवान हो गई।

6 तस्मिन्नेव ग्रामे ---------- अकारयत्।

अनुवाद उसी गाँव में एक दूसरी बुढ़िया रहती थी। उसके भी एक पुत्री थी। ईर्ष्या से उसने उसकौए का रहस्य जानलिया। सूर्य की रोशनी में चावल सुखाकर उसने भी अपनी पुत्री को उनकी रक्षा के लिए बिठा दिया। उसी प्रकार सोने के पंखों वाले कौए ने चावल खाते हुए उसको भी वैसा ही कहा। उसने सुबह वहाँ जाकर कौए की निन्दा करते हुए कहा - अरे नीच कौए। मैं आ गई, मेरे चावलों का मूल्य दो। कौए ने कहा - "मैं तुम्हारे लिए सीढ़ियाँ उतार रहा हूँ। बताओ कौनसी उतारूं सोने की चांदी की या ताँबे की?" घमण्डी लड़की ने कहा - मैं सोने की सीढ़ियों से ही आऊंगी। परन्तु कौए ने उसके लिए ताँबे की सीढ़ियाँ ही दी। सोने के कौए ने उसे भोजन भी ताँबे के बर्तनों में कराया।

7 प्रतिनिवृत्तिकाले ---------- पर्यत्यजत्।

अनुवाद लौटने के समय स्वर्णकाक ने कमरे से तीन संदूक लाकर उसके सामने रख दी। उस लोभी ने बड़ी संदूक ली। घर आकर जैसे ही उसने संदूक खोली वैसे ही उसने भयंकर काले साँप को देखा। लोभी बालिका को लोभ का फल प्राप्त हुआ। उसके बाद उसने लालच करना छोड़ दिया।

I
क) उत्तरम्
ख) उत्तरम्
ग) उत्तरम्
घ) उत्तरम्
ङ) उत्तरम्

II
क) उत्तरम्
ख) उत्तरम्
ग) उत्तरम्

अभ्यास प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत –

I

क) माता काम् आदिशत् ?
उत्तरम् पुत्रीम्

ख) स्वर्णकाकः कान् अखादत् ?
उत्तरम् तण्डुलान्

ग) प्रासादः कीदृशः वर्तते ?
उत्तरम् स्वर्णमयः

घ) गृहमागत्य तया का समुद्घाटिता ?
उत्तरम् मञ्जूषा

ङ) लोभाविष्टा बालिका कीदृशीं मञ्जूषां नयति ?
उत्तरम् बृहत्तमां

II अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

क) निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता कीदृशी आसीत् ?
उत्तरम् निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता विनम्रा मनोहरा च आसीत् ।

ख) बालिकया पूर्वं कीदृशः काकः न दृष्टः आसीत् ?
उत्तरम् बालिकया पूर्वं स्वर्णपक्षः रजतचञ्चुः स्वर्णकाकः न दृष्टः आसीत् ।

ग) निर्धनायाः दुहिता मञ्जूषायां कानि अपश्यत् ?
उत्तरम् निर्धनायाः दुहिता मञ्जूषायां महार्हाणि हीरकाणि अपश्यत् ।

घ) बालिका किं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता ?
उत्तरम् बालिका वृक्षस्योपरि स्वर्णमयं प्रसादं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता।

ङ) गर्विता बालिका कीदृशं सोपानम् अयाचत् कीदृशं च प्राप्नोत् ?
उत्तरम् गर्विता बालिका स्वर्णमयं सोपानम् अयाचत् ताम्रमयं सोपानम् च परम् प्राप्नोत्।

प्रश्न 3 स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

क) ग्रामे निर्धना स्त्री अवसत्।
प्रश्न ग्रामे का अवसत् ?

ख) स्वर्णकाकं निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत्।
प्रश्न कं निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत ?

ग) सूर्योदयात् पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता।
प्रश्न कस्मात् पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता ?

घ) बालिका निर्धनमातुः दुहिता आसीत्।
प्रश्न बालिका कस्याः दुहिता आसीत् ?

ङ) लुब्धा वृद्धा स्वर्णकाकस्य रहस्यमभिज्ञातवती।
प्रश्न लुब्धा वृद्धा कस्य रहस्यमभिज्ञातवती ?

तृतीय पाठ: - गोदोहनम्

1 एकपदेन उत्तरं लिखत-

क) मल्लिका पूजार्थं सखीभिः सह कुत्र गच्छतिस्म ?
उत्तरम् काशीविश्वनाथमन्दिरं

ख) उमायाः पितामहेन कति सेटकमितं दुग्धम् अपेक्ष्यते स्म ?
उत्तरम् त्रिशत्

ग) कुम्भकारः घटान् किमर्थं रचयति ?
उत्तरम् विक्रयणाय /जीविकार्थं

~~घ) कुम्भकारः घटान् किमर्थं ?~~
घ) कानि चन्दनस्य जिह्वालोलुपतां वर्धन्ते स्म ?
उत्तरम् मोदकानि दृष्ट्वा

ङ) नन्दिन्याः पादप्रहारैः कः रक्तरञ्जितः अभवत् ?
उत्तर चन्दनः

2 पूर्ण वाक्येन उत्तरं लिखत -

क) मल्लिका चन्दनः च मासपर्यन्तं धेनोः कथम् अकुरुताम् ?

उत्तरम् मल्लिका चन्दनः च मासपर्यन्तं धेनोः सेवायां निरतौ भवतः। धेनुम् घासादिकं गुडादिकं च भोजयतः तैलं लेपयतः तिलकं ~~धारयत~~ धारयतः रात्रौ च नीराजनेनापि तोषयतः।

ख) कालः कस्य रसं पिबति ?

उत्तरम् क्षिप्रम् अक्रियमाणस्य आदानस्य प्रदानस्य कर्तव्यस्य च कर्मणः

तद्रसं कालः पिबति ।

ग) घटमूल्यार्धं यदा मल्लिका स्वाभूषणं दातुं प्रयतते तदा कुम्भकारः किं वदति ?

उत्तरम् पुत्रिके ! नाहं पापकर्म करोमि । कथमपि नेच्छामि त्वाम् आभूषणविहिनां कर्तुम् । नयतु यथाभिलषितान् घटान् । दुग्धं विक्रीय एव घटमूल्यम् ददातु ।

घ) मल्लिकया किं दृष्ट्वा धेनोः ताडनस्य वास्तविकं कारणं ज्ञातम् ?

उत्तरम् यदा मल्लिका धेनुं दोग्धुं प्रयतते तदा सा धेनुः दुग्धहीना एव अवगच्छति इत्थम् सा धेनोः ताडनस्य वास्तविकं कारणं ज्ञातवती ।

ङ) मासपर्यन्तं धेनोः अदोहनस्य किं कारणमासीत् ?

उत्तरम् तौ मासपर्यन्तं धेनो अदोहनेन त्रिंशत सेटकम दुग्ध बहुधनं च प्राप्तुम इच्छति ।